

॥ श्रीमद्भगवद्गीता विवेचन सारसंक्षेप ॥

अध्याय 4: ज्ञानकर्मसंन्यासयोग

1/4 (श्लोक 1-10), शनिवार, 28 अक्टोबर 2023

ब्याख्याकार: गीता विदुषी माननीया बन्दना वर्णेकर महाशया

इউटिउव लिंक: <https://youtu.be/ICS4n60Fm7Q>

श्रीमद्भगवद्गीतार चतुर्थ अध्यायैर आजकेर आलोचना पर्व शुरु हय भगवान श्रीकृष्णेर काछे प्रार्थना, प्रदीप प्रज्ज्वलन ओ सुन्दर मूर्तिर दर्शनेर माध्यमे।

गुरु बन्दना, ज्ञानेश्वर महाराजेर चरणे आश्रय नेओयार पर मा सरस्वती, गीता माता, महर्षि वेदव्यासजीर पूजा करा हय। परम श्रद्धेय स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी महाराजेर पाये नमस्कार करा हय। एछाड़ाओ सकल साधकदेर अभिवादन जानाने हय।

इतिपूर्वे आमरा देखेछि ये भगवान कर्मयोगेर नीतिटि तुले धरेछेन। कर्म दिये ईश्वरेर अनुसन्धान, ईश्वरनिवेदित बुद्धि दिये काज करा, ता यतई कर्त्तन होक ना केन, युद्धेर मतो कर्म, यदि ता दायित्व हिसेबे प्राप्त हय, तबे ताओ परमात्मा स्वीकार करे नेन एवं कर्मेर बन्धन थेके मुक्ति देन। फलाफल याई होक, ताके प्रसाद हिसेबे ग्रहण करई कर्मयोग। एइभाबे अर्पण करा कर्म भगवान स्वीकार करे नेन।

ज्ञानेश्वर महाराजेर एकटि सुन्दर पंक्ति आछे:-

उचित कर्म आपुली ।

तुवा करुनी मज अर्पावी।

चित्त वृत्ती विज्ञासावी। आत्मरुपी।

कर्तृत्व ओ भोगेर मनोभाव त्याग करे निजेर मध्ये मग्न থাকते हबे एवं कर्तव्य पालन करते हबे। आमरा चारटि सुतेर बास करि। शरीर, मन, बुद्धि एवं इन्द्रिय, किन्तु आमरा पञ्चम गुरुत्वपूर्ण सुतेर, आत्माके तुले याई एवं श्रीमद्भगवद्गीता आमामेरेर आध्यात्मिक अनुसन्धानेर दिके निये येते चान।

ज्ञानेश्वर महाराज बलेछेन:-

येमन आज शारदीय पूर्णिमा एवं चाँदेर एकटि अतिप्राकृत आभा आछे, ताई एकटि पद्म फुलके सेई आभा पेते चाँदे येते हबे ना।

चन्द्र बिकाशी पद्म येमन निजेर स्थाने स्थिर हये चाँदेर सारवन्ता शुषे नेय एवं चन्द्रेर आभा लाभ करे, तेमनि श्रीमद्भगवद्गीतार श्लोकगुलि निये चिन्ता करे भगवानेर सेई दिव्य उपदेश धारण करार चेष्टा कर, जीवन एवं तार साथे साथे निजेर जायगाय अवस्थान करेई परमात्मार सन्धान करते हबे। आमामेरेर मतो साधारण मानुष, यारा गृहस्थेर दायित्व पालन करते चाय, तादेर बेशि दूरे हिमालयेर गुहाय याओयार दरकार नेई।

कांआपुला ठावो न सांडिता।
आलिगिजे चंद्र प्रगटिता
हा अनुरागु भोगिता।
कुमुदिनी जाणे।

चाँद देखा मात्रै ई ई कमलिनी तार स्थान त्याग ना करे चन्द्रके आलिङ्गन करे एवं तार आभा ओ अनुराग पेये देवत्व ओ आनन्द लाभ करे। ठिक एकईभावे, आमरा यदि परमात्मार अनुराग पेते चाई, तवे आमादेर उचित निजेर जायगाय अवस्थान करे आमादेर कर्तव्य पालन करा एवं आमादेर काजके कर्मयोगे रूपान्तर करा।

भगवानेर खौंजे থাকले, परमात्मा आमादेर साथे থাকेन। श्रीमद्भगवद्गीता सेई ईश्वरिक शक्तिर साथे आमादेर दैनन्दिन अनुसन्धानेर पथ प्रदान करे एवं ई ईश्वरिक शक्ति सर्वदा आमादेर साथे থাকे।

युद्धक्षेत्रे कौरवदेर एगारो अक्छौहिणी बाहिनीर साथे युद्ध करे, विभिन्न अस्त्रेर ध्यान करे, लक्ष्य मनोनिवेश करार समय क्रीभावे एकजन क्रमागत परमात्मार सन्धान करवे? एटा कि संभव? प्रतिदिनेर काज करार समय भगवानके स्मरण करा, ताँके अनुसन्धान करा एवं काजेर प्रस्ताव देओया? एटा किभावे संभव हवे? एटा खुवई कठिन।

येमन तारा प्रार्थनाय गान गाय:-

कर प्रणाम तेरे चरणों में
लगता हूँ अब तेरे काज।
पालन करने की आज्ञा तव
मैं नियुक्त होता हूँ आज।

भगवानके स्मरण करा एवं आपनार दैनन्दिन काजे नियुक्त हओया श्रीमद्भगवद्गीतार माध्यमे भगवानेर उपदेश।

अर्जुनेर प्रश्नबोधक अनुभूति जेने भगवान निजेई ता प्रसारित करते शुरु करेन।

4.1

श्रीभगवानुवाच

इमं(म्) विवस्वते योगं(म्), प्रोक्तवानहमव्यायम् ।
विवस्वान् मनवे प्राह , मनुस्मिन्वाकवेऽब्रवीत् ॥१॥

भगवान श्रीकृष्ण बललेन—ई अविनाशी योग आमी सूर्यके बलेछिलाम ; सूर्य ताँर पुत्र वैवस्वत मनुके, मनु ताँर पुत्र राजा इम्बुकुके एटा बलेछिलेन। १

भगवान बलेछेन: अर्जुन, तोमार मने हछे आमी तोमाके ई कर्मयोग प्रथमवार बलेछि। एटा तोमार भूल धारणा। भगवानके निवेदन करते गिये काज करा, भगवानेर सन्धान करा, ई कर्मयोग चिरन्तन।

आगेओ काके बलेछिलाम सेटा बलि। अतीते, आमी प्रथमे विवस्वान् अर्थात् सूर्यके ई योग बलेछिलाम, या कथनओ खुब शक्तिशाली आदर्शेर आकारे ध्वंस हते पारे ना। एरपर सूर्यदेव ई कथा ताँर पुत्र मनुके बललेन एवं मनु ताँर पुत्र इम्बुकुके ई कथा बललेन।

এইভাবে এই শক্তিশালী অব্যয় যোগ এক প্রজন্ম থেকে পরবর্তী প্রজন্মে সঞ্চারিত হতে থাকে। এই দিব্য স্রোত সমগ্র জীবের জন্য প্রবাহিত হয়েছে। অর্জুনের প্রশ্নবিদ্ধ মনোভাব দেখে ভগবান নিজেই সব বলতে লাগলেন।

এ প্রসঙ্গে নারদ মুনির একটি গল্প আছে:-

নারদ মুনি ভগবান বিষ্ণুর একজন মহান ভক্ত যিনি ভক্তি ছড়িয়ে দেওয়ার জন্য নারদ ভক্তি সূত্র প্রদান করেছিলেন এবং ভক্তি ছড়িয়ে দেওয়ার জন্য তিনি সমগ্র বিশ্বে বিচরণ করেন। উনার মনে হল আমি সারাক্ষণ 'নারায়ণ-নারায়ণ' নামটি স্মরণ করছি। আমি যে এত ভক্তি ছড়াই, তবে আমার মতো মহান ভক্ত আর কেউ হবে না। একবার তিনি ভগবানকে বললেন আমি আপনার পরম ভক্তের নাম শুনতে চাই। উনি মনে করলেন ভগবান শুধু তাঁর নামই নেবেন। ভগবান বললেন, আমি তাকে দেখাই। ভগবান নারদকে মৃত্যুজগত থেকে একজন কৃষকের দর্শন করিয়েছিলেন। সেই কৃষক মাঠের মধ্যে কঠোর পরিশ্রম করছিলেন, গাভীকে দোহন করছিলেন, এবং এর মধ্যে তিনি গোবিন্দ-গোবিন্দ এইমতো ঈশ্বরের নাম স্মরণ করছিলেন। নারদ বললেন, ভগবান, ইনি আপনার কাছে সেরা ভক্তের মতো মনে হচ্ছে। ভগবান বললেন উত্তরটা পরে দেব। প্রথমে কৃপ থেকে জল ভর্তি একটি কলস নিয়ে এসে মাথায় রাখুন এবং শর্ত হলো এক ফোঁটাও জল যেন ছিটকে না যায়। নারদ আদেশ পালন করে ভগবানকে বললেন, দেখ, আমি জল ভরে এনেছি। ভগবান বললেন, এ তো খুব ভালো কথা, কলস আনতে গিয়ে কতবার নারায়ণ-নারায়ণ জপ করেছিলেন? নারদ বললেন, ভগবান, আমার সমস্ত মনোযোগ ছিল জলের দিকে। এক ফোঁটা জলও ঝরতে দেওয়া হয়নি। তখন ভগবান হাসতে হাসতে বললেন, নিজের কাজ করতে গিয়ে ভগবানের নাম জপ কর, অনুসন্ধান করা একটি ঐশ্বরিক যোগ। গুরুদেব বলেছেন যে এটি মনের দ্বারা করা সর্বোচ্চ প্রচেষ্টা। এটা সহজ নয়, মনকে নিবদ্ধ রেখে ঈশ্বরের প্রতি মনোনিবেশ করা খুবই কঠিন। নারদও মনে নিলেন যে এই কর্মযোগ কঠিন হয়।

অর্জুনও ভাবছে যুদ্ধ করতে গিয়ে ভগবানের খোঁজ করা কি করে সম্ভব? এটা তো প্রথম শুনলাম। ভগবান আমাদের বলছেন যে এই দৃঢ় আদর্শ চিরন্তন এবং যুগে যুগে অবিরাম প্রবাহিত। সর্বপ্রথম আমি সূর্য ভগবানকে এটা বলেছিলাম এবং তিনি এই কর্মযোগ ক্রমাগত করে চলেছেন। মহাবিশ্বকে আলোকিত করার দায়িত্ব তার, যা তিনি নিরবচ্ছিন্নভাবে এবং কোনো পক্ষপাত ছাড়াই করে চলেছেন। আমরা রাতে ঘুমাই কিন্তু সূর্য পৃথিবীর অন্যান্য অঞ্চলের দেশগুলোকে আলোকিত করছে।

গুরুদেব তিনটি গুরুত্বপূর্ণ সূত্র বলেছেন:-

কোনো ছুটি নেই, কোনো বৈষম্য নেই এবং তৃতীয়ত খুবই গুরুত্বপূর্ণ - কোনো প্রত্যাশা নেই। সূর্য কোন পক্ষপাত ছাড়াই সবাইকে আলোকিত করেন।

জ্ঞানেশ্বর মহারাজ বলেছেন-

গার্ঘী তৃষা হরু । কাং ব্যাঘা বিষ হৌজনি মারু ।

এসঁ নেটঁঘি গা করু । তৌয় জঁসঁ ॥ ১৪৬ ॥

নদীর জল মনে করে না যে, গরু এলে তৃষ্ণা মেটাতে হবে, সিংহ এলে বিষ দিতে হবে। তিনি পক্ষপাতিত্ব দেখান না এবং উভয়ের তৃষ্ণা মেটান।

মন্তব্যকারী তার অভিজ্ঞতা বর্ণনা করেছেন। বিদ্যুৎ বিভাগে কর্মরত অবস্থায় কেউ তার কাছে ট্রান্সফরমারের দাবি করলে সে তার আত্মীয় না আমার ধর্মের তা বিবেচনা করেন না। যদি বিদ্যুৎ পাওয়া যায় তবে তা সবার জন্য। জাতি বা ধর্মের মতো কোনো বৈষম্য থাকা উচিত নয়।

তৃতীয়ত, এটা খুবই গুরুত্বপূর্ণ যে আমাদের কোনো প্রত্যাশা থাকা উচিত নয়। সূর্য যেমন সকলের জন্য সমানভাবে আলোকিত হন, কেউ তাকে অর্ঘ্য প্রদান করুক বা না করুক। আমরা আমাদের কৃতজ্ঞতা দেখানোর জন্য অর্ঘ্য

প্রদান করি। তার প্রত্যাশা নেই এবং আজও তিনি অনন্য যোগ 'কর্মযোগ' অনুসরণ করছেন। ভগবান বলেছেন যে এই চিরন্তন মজবুত আদর্শ প্রবাহিত হতে হতে একটু দুর্বল হয়ে পড়লেও আবার প্রবাহিত হতে থাকে।

4.2

এবং(ম্) পরম্পরাপ্রাপ্তম্ , ইমং(ম্) রাজর্ষয়ো বিদুঃ। স কালেনেহ মহতা, যোগো নষ্টঃ (ফ্) পরস্তপ ॥2॥

হে পরস্তপ অর্জুন ! এইভাবে পরম্পরাক্রমে প্রাপ্ত এই যোগ রাজর্ষিগণ জেনেছিলেন ; কিন্তু তার পরে এই যোগ দীর্ঘকালের ব্যবধানে পৃথীলোক হতে প্রায় বিনষ্ট হয়েছে। ২

ভগবান বলেছেন:- পরস্তপ অর্জুন, ঐতিহ্য দ্বারা প্রাপ্ত এই কর্মযোগ রাজর্ষিগণ জেনেছেন। কালের প্রভাবে এই জ্ঞান নষ্ট হয়ে যায়। সময়ের প্রভাব আমরা দেখেছি। যেমন এক কল্পে চারটি যুগ। সত্যযুগ, ত্রেতাযুগ, দ্বাপরযুগ ও কলিযুগ।

কলিযুগ চার লাখ বত্রিশ হাজার বছরের, দ্বাপর যুগ আট লাখ চৌষট্টি হাজার বছরের। এইভাবে এই চতুরযুগী সাতচল্লিশ লক্ষ ছিয়ান্ন হাজার বছরের। এভাবে হাজার চতুরযুগীর সংঘটনে ব্রহ্মার একদিন হবে আবার হাজার চতুরযুগীর সংঘটনে ব্রহ্মার রাত্রি হবে। আর ব্রহ্মার বয়স শত বছর। এই ভাধে সময়ের কত বিশাল বিস্তৃতি আছে।

এভাবে ভগবান বলছেন কালের প্রসারে এই জ্ঞান বিলুপ্ত হয়ে গেল। এখানে ভগবান দুটি কথা বলতে চান। স্বার্থপরতা থেকে ফল পাওয়ার দৌড়ে মানুষ ভুলে গেছে যে আমি যদি ঈশ্বরের কাজ করার জন্য মহাবিশ্বে এসেছি এবং আমি কেবল সেই ঈশ্বরের শক্তির জন্য কাজ করছি, তবে আমি আমার কাজ ঈশ্বরের কাছে অর্পণ করব।

রাজর্ষিরা জানতে পারলেন যে এটি ঈশ্বরের। একজন রাজর্ষি আর একজন ব্রহ্মর্ষি। ব্রহ্মর্ষি একজন অবসরপ্রাপ্ত ব্যক্তি। তারা জ্ঞানমুখী, কিন্তু ভগবান অর্জুন খাষিদের উদাহরণ দিয়েছেন যারা কর্মমুখী এবং তাদের কাজ করার সময়ও ঈশ্বরের ধ্যান ও মনন করেন।

4.3

স এবায়ং(ম্) ময়া তেऽদ্য , যোগঃ(ফ্) প্রোক্তঃ(ফ্) পুরাতনঃ। ভক্তোঃসি মে সখা চেতি , রহস্যং (ম্) হ্যেতদুত্তমম্ ॥3॥

তুমি আমার ভক্ত ও প্রিয় সখা, সেইজন্য এই পুরাতন যোগ আজ আমি তোমাকে বললাম ; কারণ এটি অতি উত্তম রহস্য অর্থাৎ গোপনীয় বিষয়। ৩

ভগবান বলেন, অর্জুন, তুমি আমার পরম বন্ধু ও ভক্ত, তাই আমি তোমাকে এই প্রাচীন (অনন্ত) জ্ঞান বলছি। ভগবান নবম অধ্যায়ে বলেছেন যে আমি তোমাকে এমন গোপন কিন্তু পবিত্র জিনিস বলছি। ভগবান তার বন্ধু অর্জুনকে গভীর, রহস্যময় কিন্তু পবিত্র জিনিস বলছেন।

অর্জুন ও শ্রীকৃষ্ণের মধ্যে মাত্র চার-পাঁচ বছরের ব্যবধান। তাদের বন্ধুত্বের যে সুন্দর বর্ণনা জ্ঞানেশ্বর মহারাজ দিয়েছেন তা আর কোথাও দেখা যায় না।

জ্ঞানেশ্বর মহারাজ বলেছেন-

তুঁ প্রমাচা পুতলা।

ভক্तीचा जिह्लाळा ।

मैत्रियेची चिक्कळा। धनुर्धरा । सुमनु शुद्धमति।

अनिंदकु तू अनंत गति।
गौप्य तरी तुजं प्रति चावळिजे।

अर्जुन, तुमि प्रेमेर मूर्त प्रतीक, तोमार काछ थेकेई केउ भक्ति शिखवे। तोमाके बन्धु हिसेवे पेते अग्निर काछे वर चेयेछि। भगवान स्वयं जिज्ञासा करछेन ये आमार सर्वदा अर्जुनेर मतो एकजन बन्धु पेते पारि एवं तारं भक्ति ग्रहण करते पारि।

अर्जुन, तोमार मन सुन्दर, तोमार बुद्धि शुद्ध, तोमार अशुभ बुद्धि नेई, तुमि कारो समालोचना करो ना एवं यदि केउ तोमार काछ थेके आश्रय निते चाय तहले तोमार काछ थेके शिखे।

"तोमार मने आछे तुमि यखन आमार काछे साहाय्य चाईते एसेछ, दुर्योधन तोमार सामने एसे आमार माथार काछे बसेछिल, किन्तु तुमि आत्मसमर्पणेर अनुभूति निये एसेछ। किन्तु आपनि आत्मसमर्पणेर अनुभूति निये आमार पायेर काछे बसेछिलेन। चोख खुलतेई आमार दृष्टि तोमार दिके चले गेल। तोमाके जिज्ञेस करले दुर्योधन बललेन, आमिओ एसेछि। तखन आमि बललाम ये आमार चोख प्रथमे अर्जुनेर उपर पड़ेछे, तई आमि प्रथमे अर्जुनके जिज्ञासा करव ये एकदिके आमार नारायणी बाहिनी या अस्त्रशस्त्रे सज्जित, अन्यदिके आमि निरस्त्र।

दुर्योधन भावलेन, अर्जुन नारायणी सेना चाईले की हवे? अर्जुन निरस्त्र श्रीकृष्णके साथे थाकार जन्य अनुरोध करलेन। भगवान बललेन, अर्जुन, आमार सङ्ग चेये कि करवे? अर्जुन बललेन, आमार रथेर लागाम तोमार हाते रेखे आमाके पथ देखाओ।

श्रीकृष्ण ओ अर्जुन समान। श्री कृष्ण युधिष्ठिर ओ भीमके नमस्कार करेन, नकुल ओ सहदेव श्री कृष्णके नमस्कार करेन, किन्तु श्रीकृष्ण ओ अर्जुन एके अपरके आलिङ्गन करेन। अर्जुन बले एटा किभावे हते पारे? श्री कृष्ण आमार वयसी। तिनि मा देवकीर पुत्र, तिनि कारागारे जन्मग्रहण करेछिलेन एवं आमरा तार मायेर काछ थेके तार लीलार कथा सुनेछि। किभावे हते पारे ये तिनि एई ज्ञान सूर्येर काछे प्रकाश करेछेन?

4.4

अर्जुन उवाच

अपरं(म्) भवतो जन्म , परं(द्) जन्म विवस्वतः।
कथमेतद्विजानीयां(न्), त्वमदौ प्रोक्तवानिति ॥४॥

अर्जुन बललेन-आपनार जन्म तो एखन अर्थां एई युगे हयेछे आर सूर्येर जन्म तो बहू पूर्वे अर्थां कल्लेर आदिते हयेछे। तवे आमि की करे वुबव ये आपनिई कल्लेर आदिते एई योगेर कथा सूर्यके बलेछिलेन ? ४

अर्जुन बले तोमार सबेमात्र जन्म हयेछे। कारागारे एई घटना घटेछे, तुमि अर्वाचीन, तहले आमि कीभावे मने नेव ये तुमि एई समस्त कथा सूर्यके बलेछ, सूर्य अति प्राचीन। आमि कि करे वुबव ये तुमि निश्चयई सूर्यदेवके आगे बलेछिले? कल्लेर शुरु थेकेई सूर्य आछेन।

4.5

श्रीभगवानुवाच

বহুনি মে ব্যতীতানি , জন্মানি তব চার্জুন। তান্যহং(ম্) বেদ সর্বাণি, ন ত্বং(ম্) বেথ পরন্তপ ॥5॥

ভগবান শ্রীকৃষ্ণ বললেন –হে পরন্তপ অর্জুন ! আমার এবং তোমার বহু জন্ম অতীত হয়েছে; সে সব তুমি জানো না, কিন্তু আমি জানি। ৫

ভগবান বলেন - হে অর্জুন, তোমার এবং আমার পূর্বে বহু জন্ম হয়েছে। আমিও বহু অবতার গ্রহণ করেছি এবং তুমিও বহু জন্ম মানব রূপে পার করেছ। তুমি এটার সম্পর্কে জান না, কিন্তু আমি জানি। বেদ মানে জ্ঞান, আমার সব কিছুর জ্ঞান আছে।

জ্ঞানেশ্বর মহারাজ বলেছেন:-

मी जेठं जेठं अवसरं।

जें जें हीऊनी अवतरं।

हैं समस्त ही स्मरं। धनुर्धरा।।

ভগবান বলেন, হে ধনুর্ধর! আমি যে যে অবসরে আমি অবতার রূপে প্রতিভূত হই আমার পুরো তার স্মরণ আছে, কিন্তু মানুষ তার আগের জন্ম ভুলে যায়।

এই ব্যবস্থা এমন, নইলে যদি মনে রাখি আগের জন্মে এই ছিল মা আর এরা ভাই ছিল, তাহলে অনেক বিভ্রান্তি হবে। এই বিস্মৃতিতে আমাদের মনে হয় যেন এই আমাদের নতুন জন্ম, আমাদের প্রথম জন্ম। ভগবান সবই জানেন, তাই ভগবদগীতা বলছে, যিনি সব জানেন তাঁকে জানুন।

স্বামী বিবেকানন্দ বলেছেন যে আপনি আমাকে সেই জিনিসগুলি গ্রহণ করার শক্তি দিন যা আমি পরিবর্তন করতে পারি না এবং আমাকে সেই জিনিসগুলি পরিবর্তন করার সাহস দিন যা আমি আমার জীবনে পরিবর্তন করতে পারি, এবং আমাকে দুটির মধ্যে পার্থক্য করার জ্ঞানও দান করুন।

এই দুটি গুরুত্বপূর্ণ জিনিস, আমি নিজের মধ্যে কি পরিবর্তন করতে পারি এবং যা আমি পরিবর্তন করতে পারি না তা আমাদের মধ্যে ঈশ্বরের প্রকাশের মতো বিবেককে জাগ্রত করা।

গীতার দুটি প্রধান কণ্ঠ রয়েছে, ঈশ্বরের প্রতি পরম ভক্তি এবং বিবেকের জাগরণ। কি করা উচিত এবং কি করা উচিত নয়। কি করবেন আর কি করবেন না, কখন করবেন আর কখন করবেন না, কীভাবে সঠিক সময়ে সঠিক সিদ্ধান্ত নেবেন। আমরা যদি এটি অর্জন করতে চাই তবে ভগবদগীতা আমাদের এটি শেখায়।

4.6

অজোঃপি সন্নব্যাত্মা , ভূতানামীশ্বরোঃ পি সন্। প্রকৃতিং(ম্) স্বামধিষ্ঠায় ,সম্ভবাম্যাত্মমায়য়া ॥6॥

আমি জন্মরহিত, অবিনাশীস্বরূপ এবং সর্বভূতের ঈশ্বর হওয়া সত্ত্বেও নিজ প্রকৃতিকে অধীন করে স্বীয় যোগমায়া দ্বারা প্রকটিত হই। ৬

ভগবান বলেছেন আমি জন্মগ্রহণ করিনি এবং আমি অমর। যা কখনো ক্ষয় হয় না, যা কখনো বিনষ্ট হয় না তা কীভাবে জন্ম নেয়?

আমরা জানি যে শক্তি তৈরি বা ধ্বংস করা যায় না, কেবল তার রূপ পরিবর্তিত হয়। এইভাবে, বয়সহীন এবং অবিদ্যমান হওয়া সত্ত্বেও, আমি সমস্ত জীবের নিয়ন্ত্রক।

আমরা অষ্টাদশ অধ্যায়ে দেখতে পাই-

**ঈশ্বরঃ সর্বভূতানাং হৃদেঃশেঃর্জুন তিষ্ঠতি ।
দ্রাময়ন্ সর্বভূতানি যন্ত্রারূঢ়ানি মায়য়া ॥১৮.৬১॥**

তিনি নিয়ন্ত্রক, সমগ্র সৃষ্টি তাঁর নিয়মে চলে।

উদাহরণস্বরূপ, নাসা সম্প্রতি পৃথিবীর মতো একটি গ্রহ আবিষ্কার করেছে যা সূর্যের চারপাশে দুই দিনে ঘোরে, যেখানে পৃথিবীর সময় লাগে তিনশ পঁয়ষট্টি দিন।

এই সব নিয়ম সৃষ্টির জন্য।

क्या धरा हमने बनाई या बुना हमने गगन।

क्या हमारी ही वजह से बह रहा सुरभित पवन।

या अगन के हम हैं स्वामी नियन्ता जल धार के।

या जगत के सूत्रधार नियामक संसार के।

আমরা এসব করি না। আমরা প্রকৃতির নিয়ন্ত্রণে আছি এবং ভগবান বলেছেন প্রকৃতিকে বশীভূত করে আমি আমার যোগ মায়ার মাধ্যমে আবির্ভূত হই। ঈশ্বর অবতরণ করেন, অর্থাৎ লুকানো ঈশ্বর দৃশ্যমান রূপে আসেন।

মানুষের জন্ম আর ঈশ্বরের অবতারের মধ্যে অনেক পার্থক্য। আমরা মানব জন্ম নিতে বিবশ ও বাধ্য। ঈশ্বর আবদ্ধ নন, তিনি নিয়ন্ত্রক। ঈশ্বর এই ত্রিবিধ প্রকৃতির অধিপতি দেবতা, প্রকৃতি ঈশ্বরের অধীন এবং আমরা প্রকৃতির অধীন। ভগবান শুধু প্রেমের বন্ধনে বেঁধে তার খেলা দেখান। গোপীকরা যখন শ্রীকৃষ্ণের তিরস্কার নিয়ে যশোদা মাতার কাছে আসে এবং যশোদা মাতা তাদের লাঠি দিয়ে বেঁধে দিতে দৌড়ে আসে, তখন ভগবান বলেন, লাঠি ছেড়ে দাও। ভগবান দৌড়ে এগিয়ে আর মা দৌড়ে পেছনে। ঈশ্বর বারবার লাঠি ছেড়ে যাওয়ার কথা বলেন। মা লাঠিটা ছেড়ে দেবার সাথে সাথে ভগবান তার দুই হাত তার গলায় রেখে তাকে বেঁধে দেন।

ভগবান বলেছেন প্রকৃতির এই গুণগুলো আমাকে বাঁধে না, আমি শুধু প্রেমের বন্ধনে আবদ্ধ।

4.7

**यदा यदा हि धर्मस्य , ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य , तदात्मानं(म्) सृजाम्यहम् ॥7॥**

হে ভারত ! যখনই ধর্মের হানি এবং অধর্মের বৃদ্ধি হয়, তখনই আমি নিজেকে সৃষ্টি করি অর্থাৎ সাকাররূপে জনসমক্ষে প্রকট হই। ৭

ভগবান এখানে তাঁর অবতার গ্রহণের কারণ ব্যাখ্যা করেছেন। এখানে অর্জুনকে ভারত বলে সম্বোধন করা হয়েছে। ভা মানে আভা। ভারত মানে যিনি জ্ঞানে আনন্দ করেন। এই দেশ অনেক ঋষি-ঋষির দেশ, যারা তাদের প্রজ্ঞার দ্বারা, বহু তরঙ্গ শোষণ করে, বহু গ্রন্থ রচনা করেছেন।

ভগবান ব্যাখ্যা করেন কোন পরিস্থিতিতে তারা ইন্দ্রিয়ের কাছে দৃশ্যমান হয়, অর্থাৎ তারা এমন একটি রূপ ধারণ করে যা আমরা আমাদের ইন্দ্রিয়ের মাধ্যমে বুঝতে পারি।

যখনই ধর্মের বিনাশ হয়, অধর্মের বৃদ্ধি হয়, তখনই আমি আমার ইন্দ্রিয়ের দৃশ্যমান রূপে আবির্ভূত হই।

ভগবদগীতার প্রেক্ষাপটে আমাদের এটা বোঝা উচিত। আমাদের যা করতে হয় তাকে বলা হয় কর্তব্য এবং যেখানে যেতে হবে তাকে গন্তব্য বলে। নিজের ধর্ম যা করে তাই করতে হবে। যার ফলে নিজেরও উন্নতি হবে এবং অন্যের জীবনও উন্নত হবে। ধর্মের নামে নিরীহ মানুষকে হত্যা করা ধর্মের ক্ষতি।

তারপর আমি আমার নিজের তৈরি করি। ঠিক যেমন রাবণও যজ্ঞের খুব আচার-অনুষ্ঠান ছিল, কিন্তু এ ধরনের লোককে ধার্মিক বলা যায় না।

শিবাজী মহারাজের সময়ে, রাজা জয় সিং ছিলেন যিনি একলিঙ্গ জীর উপাসক ছিলেন কিন্তু তিনি আওরঙ্গজেবকে সমর্থন করেছিলেন। একইভাবে রাবণ ও কুম্ভকর্ণ ছিলেন অত্যন্ত আচার-অনুষ্ঠান, তারা দেবতাদের সন্তুষ্ট করতেন এবং বর পেতেন, কিন্তু এই ধরনের লোকদের ধার্মিক বলা যায় না।

4.8

পরিত্রাণায় সাধূনাং(ম্) , বিনাশায় চ দুষ্কৃতাম্। ধর্মসংস্থাপনার্থায় , সন্তুবামি যুগে যুগে ॥৪॥

সাধুদের রক্ষার জন্য, পাপীদের বিনাশের জন্য এবং ধর্ম সংস্থাপনের জন্য আমি যুগে যুগে অবতীর্ণ হই। ৮

ভগবান ব্যাখ্যা করেন কেন তিনি আসেন- **ভগবান আসেন সাধু ব্যক্তিদের মুক্তির জন্য, দুষ্টির বিনাশের জন্য এবং ধর্ম প্রতিষ্ঠার জন্য।**

এখন কলিযুগে ভগবান কীভাবে আসবেন সে সম্পর্কে একটি কথা আছে-

এই ঈশ্বর, সংগঠিত সজ্জনদের শক্তি। সজ্জনদের মধ্যে দৈবী শক্তির জাগরণই হল ভগবানের অবতারণা।

ধর্ম তাকেও বলা হয় যেখানে প্রজাদের ধারণাও হয় এবং তাদের লালন-পালন হয়। যা নিয়ে আসবে অভ্যুত্থান, বৈষয়িক উন্নতি ও পরম কল্যাণ, তাকেই ধর্ম বলে।

ঠিক যেমন ভগবান রাম অবতরণ করেন এবং মন্ত্রার কারণে বনবাস গ্রহণ করেন, কিন্তু ভগবান তার ধনুক এবং তীর পরিত্যাগ করেননি। মা সীতা জিজ্ঞেস করলেন, তুমি তোমার সব সুন্দর পোশাক ও গয়না পরিত্যাগ করলেও তোমার তীর-ধনুক ত্যাগ করোনি। যখন তারা বনে আরও এগিয়ে গেল, হাড়ের স্তূপ দেখে জানকী মাতা জিজ্ঞাসা করলেন, তখন ভগবান রাম বললেন যে এই সমস্ত ঋষিরা যজ্ঞ করছিলেন এবং রাক্ষসরা তাদের এখানে হত্যা করেছে। ক্ষত্রিয়দের কর্তব্য সজ্জনদের রক্ষা করা। অতএব, তাদের কখনই অস্ত্র ছেড়ে দেওয়া উচিত নয়। সর্বদা সজ্জনদের রক্ষা করার জন্য সর্বদা প্রস্তুত থাকা উচিত।

যেমন কখনো কখনো আমাদের রান্নাঘর, আমাদের ঘর, আমাদের অফিসের বিন্যাস পরিবর্তন করতে হয়, একইভাবে ভগবান বলেছেন যে আমার সৃষ্টির ব্যবস্থা করার জন্য আমাকে মাঝে মাঝে অবতারণা হতে হয়।

হনুমানজী জিজ্ঞেস করলে ভগবান বললেন যে আমি সজ্জনদের রক্ষা করতে এসেছি, হনুমানজী বললেন, আপনি অন্য কারণে আসেন। আপনি আপনার ভক্তদের জন্য এসেছেন, আপনি তাদের দায়িত্ব পালন করতে এসেছেন। পিতার ধর্ম, পুত্রের ধর্ম, এই সকল কর্তব্য কিভাবে পালন করা যায়? পিতার ধর্ম, পুত্রের ধর্ম, এই সমস্ত কর্তব্য কীভাবে পালন করা উচিত তা বলতে তারা আসে। বন্ধু এবং শত্রুর সাথে কীভাবে আচরণ করা উচিত তা ঈশ্বর বলতে আসেন।

রাবণের মৃত্যুর পর, যখন বিভীষণ শেষকৃত্য করতে অস্বীকার করেন, তখন ভগবান রাম বিভীষণকে বলেছিলেন যে

তাকে তার ভাই হিসাবে বিবেচনা করে তার শেষকৃত্য করতে। মৃত্যুর পর তিনি আর শত্রু ছিলেন না।

জ্ঞানেশ্বর মহারাজ বলেন,
মী অবিবেকাচী কাজলী।
ফেহুনী বিবেকদীপ উজলী।
তৈ যোগীয়া বাহে দিবাচী।
নিরंतर।

বিবেক মেঘলা হলে ভগবানকে ডাকলেই বিবেককে জাগ্রত করা যায়।

গুরুদেব খুব ভালো কথা বলেছেন। কিভাবে মানুষ তার ধর্মকে নিজের মধ্যে প্রতিষ্ঠা করার জন্য ঈশ্বরকে ডাকবে?

গুরুদেব বলেছেন যে আমাদের সময়ের চল্লিশ শতাংশ নিজেদের মধ্যে সদগুণ জাগ্রত করার জন্য ব্যয় করা উচিত। আমরা ছাব্বিশটি দৈবী গুণ দেখেছি। ধীরে ধীরে আমাদের জীবনে তাদের প্রয়োগ করা, আমাদের সময় এতে ব্যয় করা উচিত। আজকের কর্তব্যের জন্য ত্রিশ শতাংশ এবং আচারের জন্য বিশ শতাংশ সময় দিতে হবে। সারাদিন আচার-অনুষ্ঠান করা ধর্ম নয়। আমাদের সময় আমাদের বংশের অন্যান্য ঐতিহ্যের জন্য দশ শতাংশ হওয়া উচিত। আচার-অনুষ্ঠানে সারাদিন কাটলে আমাদের জীবন উন্নত হবে না। এভাবে সময়ের সমন্বয় করে নিজের ধর্ম প্রতিষ্ঠা করতে হবে।

4.9

**জন্ম কর্ম চ মে দিব্যম্ , এবং(ম্) য়ো বেত্তি তত্ত্বতঃ।
ত্যক্ত্বা দেহং(ম্) পুনর্জন্ম , নৈতি মামেতি সোঃর্জুন ॥9॥**

হে অর্জুন ! আমার জন্ম ও কর্ম দিব্য অর্থাৎ নির্মল ও অলৌকিক—এইভাবে যে ব্যক্তি আমাকে তত্ত্বতঃ জানেন, তিনি দেহত্যাগ করে পুনরায় জন্মগ্রহণ করেন না অর্থাৎ তিনি আমাকেই লাভ করেন। ৯

ভগবান যাকেও পাঠাতে পারেন দুষ্টদের বধ করার জন্য, কিন্তু তাঁকে নিজেই আসতে হবে তাঁর ভক্তদের জন্য।

শবরীর গুরুদেব যখন বলেছিলেন যে ভগবান রাম আসবেন, তখন শবরী বিশ্বাস করেছিলেন যে তিনি অবশ্যই আসবেন এবং প্রতিদিন তিনি পূজার ডালা প্রস্তুত রাখতেন, ভগবানের জন্য সমস্ত পথ পরিষ্কার করতেন, ফল সংগ্রহ করতেন এবং যখন ভগবান আসেন সেদিন শবরীর জীবনের শেষ দিন ছিল।

হনুমানজী বললেন, ভগবান, আপনি আপনার এমন ভক্তদের জন্য আসেন। ভগবান যখন অবতারণা করেন, যেমন ধনুর্ধারী রাম এবং বংশীধারী কৃষ্ণ, তারা সকলের মনে লীন হয়ে যায়।

ভগবান বলেন, অর্জুন, আমার জন্ম দিব্য, যিনি সারমর্ম থেকে এ কথা জানেন, যিনি নিরন্তর ভগবানের সন্ধানে থাকেন, তাকে দেহ ত্যাগের পর পুনর্জন্ম নিতে হয় না।

4.10

**বীতরাগভয়ক্রোধা , মন্ময়া মামুপাপ্রিতাঃ।
বহবো জ্ঞানতপসা , পূতা মদ্ভাবমাগতাঃ ॥10॥**

যাঁদের আসক্তি, ভয় ও ক্রোধ সর্বতোভাবে নষ্ট হয়েছে, যাঁরা আমার প্রেমে একাগ্রচিত্ত এবং আমার শরণাপন্ন—এরূপ বহু ভক্ত জ্ঞানরূপ তপস্যা দ্বারা পবিত্র হয়ে আমার স্বরূপে স্থিতি লাভ করেছেন। ১০

অনেক ভগবান-নির্ভর ভক্ত যারা আসক্তি, ভয় ও ক্রোধ থেকে মুক্ত হয়ে সর্বদা ভগবানের সন্ধানে আছেন, যারা নিঃশর্ত ভালবাসায় তাদের হৃদয় ভগবানের কাছে সমর্পণ করেছেন, তারা আমাকে পেয়েছেন। দেহে অবস্থান করেই তিনি জ্ঞান দ্বারা শুদ্ধ হয়ে আমাকে লাভ করেন।

কোনো কিছুর প্রতি আসক্তি থাকে এবং যখন আমরা তা পাই না, তখন রাগ দেখা দেয়। যখন কোন আসক্তি থাকে না, তখন ভয়ও চলে যায়। আমরা অনেক সাধু ও মহাত্মার জীবনে এটি দেখতে পাই যাদের জীবন থেকে রাগ চলে গেছে।

সন্ত একনাথ মহারাজকে রাগান্বিত করার জন্য শর্ত আরোপ করা হয়েছিল-

কখনো কেউ জুতা পরে তার মন্দিরে যেত। খাবার পরিবেশন করতে করতে কখনো কখনো স্ত্রীর পিঠে বসতেন। তখন একনাথ মহারাজ বলতেন, দেখ আমার ছেলে তোমার পিঠে বসে আছে, তাকে পড়ে যেতে দিও না। স্ত্রী গিরিজা আরও বলেন, আমি যেমন হরিকে আমার কোলে বসাই, তেমনি তাকে আমার পিঠে বসিয়ে দেব। কখনো রাগ করেনি। যারা এমন শুদ্ধ জীবন যাপন করে তারা দেহে বাস করেও ভগবানকে লাভ করে।
চিন্তা যেমন, মনও তেমনি, মনকে ভগবানের কাছে দেওয়ার মানে কী?

আমরা একটি গল্প থেকে বুঝতে পারি।

ভৃঙ্গি পোকা অন্যান্য পোকামাকড় ধরে, তাদের শক্তভাবে কামড়ায় এবং মাটিতে পুঁতে ফেলে। এখন তার বের হওয়ার পথ বন্ধ। ভৃঙ্গি পোকা চলে যায় কিন্তু ভিতরের পোকা ভাবতে থাকে, কিভাবে এলো, কিভাবে গেল। যতক্ষণ ভৃঙ্গি পোকা ফিরে আসে ততক্ষণ ভিতরে থাকা পোকাটি নতুন ভৃঙ্গি পোকা হয়ে যায়। কেউ যা নিয়ে চিন্তা করে, মন একই হতে থাকে এবং মানুষের জীবনও একই হতে থাকে। যারা ভগবানের কথা চিন্তা করে, তারাই ভগবানকে লাভ করে।

জ্ঞানেশ্বর মহারাজ বলেছেন-

जे मद्रावा झाले ते मीच होऊन गेले।

से मानुष्य रूपे वथाकलेण परमात्मार साथे एकरूप हन।

आजी झाला सत्संग तुका झाला पांडुरंग।

भजन करते करते सन्त तुकाराम स्वयं विठ्ठल হয়ে যান।

কীভাবে প্রতিদিন ঈশ্বরের সন্ধান করতে হবে, কীভাবে প্রতিদিন তাঁর উপাসনা করতে হবে, কীভাবে পরম তত্ত্ব অর্জন করতে হবে, তা ভগবান নিম্নলিখিত শ্লোকগুলিতে ব্যাখ্যা করেছেন। উনি আরও ব্যাখ্যা করেছেন কর্ম, বিকর্ম ও অকর্মের নীতি।

গঙ্গার পবিত্র তীরে গুরুদেবের মুখ থেকে প্রতি বছর যে জ্ঞানের স্রোত প্রবাহিত হয় তার কিছু কণা সংগ্রহ করে সাধকদের সাথে ভাগ করা হয়েছিল। জ্ঞানেশ্বর মহারাজের চরণে এই আলোচনা পর্ব নিবেদন করা হয়। আজকের আলোচনা পর্ব শেষ হয়েছে।

প্রশ্ন ও উত্তর:-

প্রশ্নকর্তা:- স্বপ্না দিদি

প্রশ্ন:- যারা নীরবে অধর্ম দেখে। ভীষ্ম হোক, দ্রোণ হোক বা কর্ণ হোক, সবাই নিহত। কেন ভগবান পিতামহ ভীষ্মের

হৃদয় পরিবর্তন করতে পারলেন না, যদিও তিনি শ্রীকৃষ্ণের সম্পূর্ণ একনিষ্ঠ ভক্ত ছিলেন?

উত্তর:- অর্জুন ভগবান শ্রীকৃষ্ণকে কথা দিয়েছিলেন যে তিনি যা বলবেন অর্জুন তাই করবেন, কিন্তু ভীষ্ম এমন প্রতিশ্রুতি দেননি। পিতামহ ভীষ্ম মাতা সত্যবতীকে প্রতিশ্রুতি দিয়েছিলেন যে তিনি যতদিন জীবিত থাকবেন ততদিন তিনি বিয়ে করবেন না এবং সিংহাসনে বসবেন না, তবে তিনি তাঁর রাজদণ্ড ত্যাগ করবেন না। তিনি তার প্রতিজ্ঞায় আবদ্ধ ছিলেন। ঈশ্বর বলেছেন যে কঠিন পরিস্থিতিতে আমাদের প্রতিজ্ঞা ভঙ্গ করতে হবে। শ্রীকৃষ্ণ, যিনি যুদ্ধক্ষেত্রে অস্ত্র না তোলার প্রতিজ্ঞা করেছিলেন, তিনিও সুদর্শন চক্র নিয়ে ভীষ্ম পিতামহের পিছনে দৌড়েছিলেন, কিন্তু পিতামহ শেষ অবধি আবদ্ধ ছিলেন, তাই ভগবান কিছুই করতে পারেননি।

প্রশ্নকর্তা:- জেঠা খুরানা ভাইয়া

প্রশ্ন- ভগবান নিরাকার, ভক্তরা তাঁর কাছে গেলে নিরাকারকেই দেখেন, তখন আনন্দ পান কী করে? যেখানে ভগবান বলেছেন জড় রূপের পূজা করতে। তাহলে তারা কিভাবে নিরাকার রূপে ভক্তের কাছে পৌঁছাবে?

উত্তর:- ভক্তের অনুভূতি অনুসারে ভগবান সাকার বা নিরাকার। জলাশয়ে যেমন বরফ থাকে, তেমনি ভগবান নিরাকার রূপে আসেন, কিন্তু এর অর্থ এই নয় যে ভগবান দৈহিক রূপে নেই। মনের কিছু আকৃতি দরকার, তাই ভগবান বলেছেন সগুণ রূপের পূজা কর। ভগবান ভক্তকে লীলা দেখানোর জন্য দৈহিক রূপে আবির্ভূত হন।

প্রশ্নকর্তা:- মাধবী চাওলা দিদি

প্রশ্ন:- গ্রহণকালে গীতা পাঠ করা উচিত কি না? এটা কি শ্রীমদ্ভগবদগীতা পড়া নাকি মন্ত্র জপ?

উত্তর:- শ্রীমদ্ভগবদগীতা উভয়ই, চন্দ্রগ্রহণের সময়ও পাঠ করা যায়। শ্রীমদ্ভগবদগীতা মৃত্যুর পরেও অশৌচেও পাঠ করা যায়, এটি একটি শোধনকারী স্রোত, এটি শুদ্ধকারী।

প্রশ্ন:- রাতে শ্রীমদ্ভগবদগীতা পাঠ করা যাবে কি?

উত্তর:- হ্যাঁ, রাতে শ্রীমদ্ভগবদ গীতা পাঠে কোনো ক্ষতি নেই। শ্রীমদ্ভগবদগীতার প্রতিটি শব্দাংশ একটি মন্ত্র, এটি সংযুক্তি আকারে মোহরূপী মহিষাসুরকে সম্পূর্ণরূপে ধ্বংস করে।

প্রশ্নকর্তা:- কীর্তি দীক্ষিত দিদি

প্রশ্ন:- আমাদের উৎপত্তি কবে?

উত্তর:- আমি ধর্মগ্রন্থ তেমন অধ্যয়ন করিনি। বিশ্ব ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও মহেশ দ্বারা পরিচালিত হয়। সৃষ্টি, রক্ষণাবেক্ষণ ও বিনাশ যথাক্রমে ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও মহেশ দ্বারা হয়। বানর থেকে মানুষ সৃষ্টি হয়নি। ভগবান মানব যোনিকে আলাদাভাবে সৃষ্টি করেছেন, এটাই একমাত্র যোগ রূপ যোনি। বাকি চুরাশি লক্ষ যোনি হল ভোগের যোনি।

প্রশ্নকর্তা:- রামকুমার ভাইয়া

প্রশ্ন- ভগবানের কাছে ভিন্ন ভিন্ন প্রার্থনা করা ঠিক কি না? এটা সকাম না নিষ্কাম ?

উত্তর:- হ্যাঁ! প্রার্থনা করে ভগবানের কাছে চাওয়া দোষের কিছু নেই। এটি একটি সকাম, আমরা এখনও নিষ্কাম পর্যন্ত পৌঁছাতে পারিনি। কিছু অর্জনের পর, ঈশ্বরের প্রতি বিশ্বাস দৃঢ় হয় এবং ধীরে ধীরে নিঃস্বার্থে পরিণত হয়। মিনতি বারবার করা উচিত নয়। একটি শিশু যেমন খেলনা নিয়ে খেলা করতে করতে ক্লান্ত হয়ে মায়ের কাছে ছুটে যায়, তেমনি একজন ভক্তেরও কেবল ভগবানের কাছেই ভগবানকে চাওয়া উচিত। কোন কিছু চাওয়ার দোষ নেই।



আমাদের বিশ্বাস যে আপনার এই বিবেচনাটি পড়ে ভালো লেগেছে। দয়া করে নিম্নে দেওয়া লিঙ্কটি ব্যবহার করে
আপনার মূল্যবান মতামত দিন -

<https://vivechan.learngeeta.com/feedback/>

বিবেচন সারটি পড়ার জন্য, অনেক ধন্যবাদ!

আমরা সকল গীতা সেবী, এক অতুলনীয় প্রত্যাশা নিয়ে, বিবেচনের অংশগুলি বিশুদ্ধ ভাবে আপনার কাছে পৌঁছানোর
প্রচেষ্টা রাখি। কোনো বানান বা ভাষারগত ত্রুটির জন্য আমরা ক্ষমাপ্রার্থী।

জয় শ্রীকৃষ্ণ!

সংকলন: গীতাপরিবার – রচনাশ্রম লেখন বিভাগ

প্রতি ঘরে গীতা, প্রতি হাতে গীতা!!

আসুন আমরা সবাই গীতা পরিবারের এই ধ্যেয় মন্ত্রের সাথে যুক্ত হয়ে নিজেদের পরিচিত বন্ধুবান্ধবদের গীতাশ্রেণী
উপহার হিসাবে পাঠাই।

<https://gift.learngeeta.com/>

গীতা পরিবার একটি নতুন উদ্যোগ নিয়েছে। এখন আপনি পূর্বে পরিচালিত সমস্ত ব্যাখ্যার (বিবেচনের) ইউটিউব ভিডিও
দেখতে পারেন এবং PDF পড়তে পারেন। অনুগ্রহ করে নিচের লিঙ্কটি ব্যবহার করুন।

<https://vivechan.learngeeta.com/>

॥ গীতা পড়ুন, পড়ান, জীবনে গ্রহণ করুন ॥

॥ ॐ শ্রীকৃষ্ণার্ণমস্তু ॥